प्राक्कथन

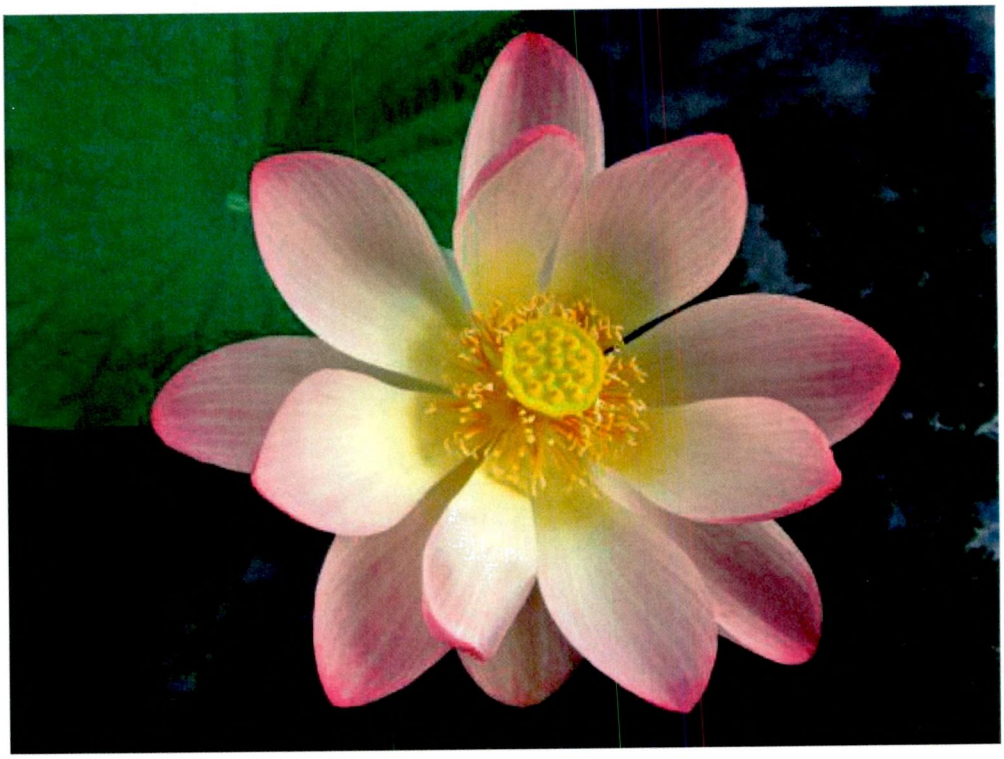

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का प्रादुर्भाव भारतेन्दुकाल से माना जाता है और विभिन्न पड़ावों को पार करते हुए हिन्दी साहित्य की विकास–यात्रा ऐसे एक बिंदु पर पहुँच गयी है कि भारतीय परंपरा को पहचानना भी अब मुश्किल–सा लग रहा है। आधुनिक भारतीय जनजीवन आशा–निराशा, आस्था–अनास्था, नैतिकता–अनैतिकता तथा शांति के द्वंद्वमय झूले में झूल रहा है। समाज जिन आदर्शों को जीवन के लिए अनिवार्य समझता था उनके आगे अनेक प्रश्न–चिह्न लगाये गये। इसका सर्वाधिक प्रभाव आज के युवा वर्ग पर पड़ रहा है।

केवल स्त्री–पुरुषों के संबंध में नहीं, यह नैतिक पतन जीवन के हरेक पहलू को क्षीण बनाता हुआ संक्रामक बीमारी की भाँति समाज में विस्तार पा रहा है। सत्य, अहिंसा, न्याय, त्याग, सहिष्णुता जैसे जिन तत्वों को भारत अपने पारंपरिक गुण मानता है उनका असली चेहरा जीवन के किसी भी क्षेत्र में आज दिखाई नहीं देता। जीवन की मान्यताओं में आये इन नैतिक परिवर्तनों को सुधारने का कार्य हर भारतवासी का कर्तव्य है।

राष्ट्र की ऐसी अवस्था में सारी प्रजा दुर्भेद्य चट्टान की तरह हो जाये, किसी को उसकी ओर आँख उठाने का साहस न हो, ऐसी स्थिति देश की वही बना सकती है जिसके पास सहज जीवन का कवच होगा, सत्य की तलवार होगी, धैर्य का रथ होगा, साहस की ढ़ाल होगी, मैत्री का पाश होगा और धर्म का नेतृत्व होगा। नई सामाजिक मर्यादा और आदर्श की स्थापना तथा तदनुरूप मानवीय भावों का नया संस्कार देना प्राथमिक महत्व का राष्ट्रीय दायित्व है।

हिन्दी में उपन्यास साहित्य सुधारवादी दृष्टि लेकर आया था। किंतु वह पूर्ण रूप से संभव नहीं हो पाया। तत्कालीन समाज की आवश्यकताओं को प्रकट

करने एवं नवीन चेतना तथा जागरण के प्रसार की दिशा में उपन्यास एक शक्तिशाली माध्यम है। हमारा दायित्व व्यक्ति का, राष्ट्र का और समाज का निर्माण करना है।

श्री वृंदावनलाल वर्मा जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के द्वारा सामाजिक, राष्ट्रीय प्रेम सूत्र को दृढ़ करने का सफल अभियान किया। उनके सभी ऐतिहासिक उपन्यास राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में अतीत के गौरव का गान और संस्कृति के दुर्बल पक्षों पर विचार किया है। वर्माजी की कृति 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। लेखक ने रानी लक्ष्मीबाई की रचना के माध्यम से एक ऐसी नायिका का चित्रण किया है, जो नारियों को फिर से गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण दिलाने और उनमें ओजपूर्ण भावनाओं को भरने में अत्यंत सफल रही हैं।

वर्माजी अपने उपन्यासों में नायिकाओं के चरित्र को उभारा है। उन्होंने नारी शक्ति को अपार माना है और नारी को शक्तिस्वरूपिणी के रूप में दर्शाया है। अपने उपन्यासों में नारी की स्थिति को जीवंतता से चित्रित किया है। उन्होंने नारी की उदात्तता की रूपकल्पना भी की है। उनकी नायिकाएँ अपने आदर्शों को नये सिरे से प्रस्तुत करना चाहती हैं जिससे नारियों को एक दिशा प्राप्त हो सके और वे अपने अधिकारों के प्रति सचेष्ट होकर, राष्ट्र के नवनिर्माण के दायित्व में सामूहिक रूप से जुट जाएँ। साथ ही धार्मिक अंधविश्वास, जाति परिवर्तन, रूढ़िग्रस्त धारणा आदि अनेक समस्याओं को समाज से हटाकर उनके स्थान पर लेखक ने एक नवीन एवं जीवंत समाज का निर्माण करने का प्रयत्न किया है। इन सभी बातों से प्रेरणा पाकर ही मैंने **'वृंदावनलाल वर्मा कृत 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में नायिका परिकल्पना'** के शीर्षक से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्रणयन कार्य किया है।

विवेचनगत सुविधा के विचार से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय उपन्यास के सिद्धान्त पक्ष से संबंधित है। इसमें 'उपन्यास' शब्द की व्युत्पत्ति, प्रयोग एवं अर्थ, 'उपन्यास' की परिभाषाएँ, महत्व एवं उपयोगिता आदि विषयों को बताकर उपन्यास के आधारभूत तत्वों का विवेचन अंकित किया गया है। इस संदर्भ में 'उपन्यास' के विविध रूपों का विवरणात्मक ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में वृंदावनलाल वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार किया गया है। इसके अंतर्गत उपन्यासकार का जीवन परिचय, साहित्यिक परिचय, बुंदेलखंड से उनका तीव्र लगाव जो उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित होता है, इसका विवरण विस्तार से दिया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' की संक्षिप्त कथावस्तु को बताते हुए कथानक की ऐतिहासिकता एवं वर्गीकरण, आधिकारिक एवं प्रासंगिक कथाओं को विस्तार से बताते हुए उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही दोनों कथानकों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' के पात्र एवं चरित्र–चित्रण पर प्रकाश डाला गया है। इसके अंतर्गत 'उपन्यास' के रचना तत्वों में पात्र–योजना, चरित्रांकन के माध्यम एवं विविध प्रकार, 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' में पात्र एवं चरित्र–चित्रण पर विचार किया गया है।

पंचम अध्याय इस शोध प्रबन्ध का प्राणभूत अंग है एवं इस शोध की आत्मा है। यह 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में नायिका परिकल्पना से संबद्ध है। इसके अंतर्गत पात्र–योजना में नारी पात्र की अवधारणा एवं नायिका की महत्ता, नायिकाओं की परिकल्पना के उद्देश्य एवं आधुनिककाल में उसका स्वरूप, वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में नायिका परिकल्पना, राष्ट्रीयता का स्वरूप, पोषक तत्व एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ, 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना एवं राष्ट्रीय भावना आदि पर विचार किया गया है। मनुष्य का अपने देश और देश की उन्नति के लिए सतत प्रयत्न करना और उसकी रक्षा के लिए अपना तन, मन, धन का न्योछावर करना राष्ट्रीयता कहलाता है। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'मृगनयनी' आदि उपन्यासों की नायिकाओं में राष्ट्रीयता का पूर्ण विकास प्रदर्शित किया गया है। इनकी वीरता, त्याग, शौर्य और राष्ट्रप्रेम विश्वसाहित्य के सम्मुख एक अद्‌भुत उदाहरण है।

इसमें यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि दोनों ऐतिहासिक उपन्यास मानवीय मूल्यों की परिचायिका हैं और आज की स्थिति में उसकी अहं भूमिका है। इन उपन्यासों की नायिकाओं के चरित्र के द्वारा कड़ी मेहनत, साहस, निड़रता, प्रकृति प्रेम, दृढ़ प्रतिज्ञा, स्वाभिमानता, मर्यादा, कर्मठ, कर्तव्य के प्रति जागरूकता, उदारता, त्याग, प्रेरणा, सहनशीलता, व्यवहार कुशलता, आत्मविश्वास, संयम, सरलता, गंभीरता, सबसे बढ़कर आदर्श भारतीय नारीत्व जैसे मानवीय मूल्यों की बातें पाठकों तक पहुँचानी हैं। यह परमावश्यक है कि नई पीढ़ी इसे ग्रहण कर जीवन में अनुपालित करें।

षष्टम अध्याय : उपसंहार – 'अंत भला तो सब भला' इसके अंतर्गत शोध प्रबन्ध में आगत वर्माजी की औपन्यासिक प्रमुख विशेषताओं का समाकलन करते हुए उनसे सहज रूप से निकलने वाले निष्कर्षों पर रेखांकन किया गया है।

आज हमारा देश प्रगति की ओर अग्रसर है, जिसमें नारियों का भी उतना ही उत्तरदायित्व है, जितना पुरुषों का। नारी किसी भी रूप में पुरुषों से कम नहीं है। ऐसी स्थिति में हमारा यह प्रथम एवं प्रमुख कर्तव्य हो जाता है कि नारियों में जिस सीमा तक नैतिकता का पतन हुआ है, उसके प्रति उन्हें सचेत कर उनमें जीवन की गरिमा को स्थापित करने की प्रेरणा दे सकें। इस बात को इन उपन्यासों की नायिकाओं के चरित्र विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मेरे इस प्रयास में अगर कहीं कोई त्रुटि नज़र आए तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। मेरा यह लघु प्रयास कि इस प्रबंध द्वारा वर्माजी के नारी पात्रों के वैशिष्ट्य एवं गांभीर्य को समझने की दिशा में, अगर कोई नई दृष्टि मिलती है तो इसकी सार्थकता सिद्ध हो जाएगी।

विषयानुक्रमणिका

पृ.सं

प्रथम अध्याय : उपन्यास की पृष्ठभूमि एवं तत्वों का अध्ययन 1–38

1. 'उपन्यास' : शब्द की व्युत्पत्ति, प्रयोग एवं अर्थ 1
2. 'उपन्यास' की परिभाषाएँ, महत्व एवं उपयोगिता 3
3. 'उपन्यास' के तत्व 10
4. उपन्यास के विविध रूप 33

द्वितीय अध्याय : वृंदावनलाल वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 39–60

1. हिंदी के 'वाल्टर स्कॉट' वर्माजी 39
2. जीवन परिचय 40
3. बुंदेलखंड और वर्माजी 43
4. साहित्यिक परिचय 47
5. वर्माजी के बारे में विभिन्न दिग्गजों के विचारों का अभिव्यक्तिकरण 59

तृतीय अध्याय : 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों के कथानकों का मूल्यांकन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन 61–121

1. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' की संक्षिप्त कथावस्तु 61
2. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' के कथानक की ऐतिहासिकता एवं वर्गीकरण 65

पृ.सं

3. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' का आधिकारिक कथानक एवं प्रासंगिक कथाएँ 68
4. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' के कथानक की विशेषताएँ 78
5. 'मृगनयनी' की संक्षिप्त कथावस्तु 84
6. 'मृगनयनी' के कथानक की ऐतिहासिकता एवं वर्गीकरण 90
7. 'मृगनयनी' का आधिकारिक कथानक एवं प्रासंगिक कथाएँ 97
8. 'मृगनयनी' के कथानक की विशेषताएँ 109
9. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' के कथानकों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण 119

चतुर्थ अध्याय : 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में पात्र एवं चरित्र–चित्रण 122–169

1. 'उपन्यास' के रचना तत्वों में पात्र–योजना एवं चरित्र–चित्रण 123
2. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में पात्र एवं चरित्र–चित्रण 129
3. 'मृगनयनी' में पात्र एवं चरित्र–चित्रण 145

पंचम अध्याय : 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में नायिका परिकल्पना 170–238

1. पात्र–योजना में नारी पात्र की अवधारणा एवं नायिका की महत्ता 171
2. नायिकाओं की परिकल्पना के उद्देश्य एवं आधुनिक काल में उसका स्वरूप 178
3. वर्माजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में नायिका परिकल्पना 192
4. राष्ट्रीयता का स्वरूप एवं तत्व 197

पृ.स

5. 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में नायिका परिकल्पना और राष्ट्रीय भावना 212

6. 'मृगनयनी' में नायिका परिकल्पना और राष्ट्रीय भावना 224

7. आज की प्रासंगिकता में 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' एवं 'मृगनयनी' उपन्यासों में दृष्टिगत मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन एवं अभिवृत्ति 230

षष्ठम अध्याय : उपसंहार 239—250

ग्रंथ सूची i-ix